MASL–202

गद्य एवं पद्य काव्य

एम. ए. संस्कृत (एमएएसएल–12 / 16 / 17)

द्वितीय वर्ष, सत्र 2017

समय : 3 घण्टा पूर्णांक : 80

नोट : यह प्रश्न पत्र अस्सी (80) अंकों का है जो तीन (03) खण्डों 'क', 'ख' तथा 'ग' में विभाजित है। शिक्षार्थियों को इन खण्डों में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में चार (04) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. निम्नलिखित श्लोकों एवं गद्यांशों में से किन्हीं दो की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—

   (क) त्वामाष्ढं पवनपदवीमुद्गृहीताल कान्ताः
   प्रेक्षिष्यन्ते पथिकवनिताः प्रत्ययादाश्वसन्त्यः।
   कः संनद्धे विरहविधुरां त्वय्युपेक्षेत जायां
   न स्यादन्योऽप्यहमिव जनो यः पराधीनवृत्तिः॥

(ख) तस्याः किञ्चित्करधृतमिव प्राप्त वानीरशाखं

हृत्वा नीलं सलिलवसनं मुक्तरोधो नितम्बम्।

प्रस्थानं ते कथमयि सखे लम्बमानस्य भावि

ज्ञातास्वादो विवृतजघनां को विहातुं समर्थः॥

(ग) तस्मिन् पर्वते आसीदेको महान् कन्दरः। तस्मिन्नेव महामुनिरेकः समाधौ तिष्ठति स्म। कदा स समाधिमङ्गीकृतवानिति कोऽपि न वेत्ति। ग्रामणी-ग्रामीण-ग्रामाः समागत्य मध्ये-मध्ये तं पूजयन्ति प्रणमन्ति स्तुवन्ति च। तं केचित् कपिल इति, अपरे लोमशः इति इतरे जैगीषव्य इति, अन्ये च मार्कण्डेय इति, विश्वसन्ति स्म, स एवायमधुना शिखरादवतरन् ब्रह्मचारिवटुभ्या-मदर्शि।

(घ) भगवन् ! धैर्येण, प्रसादेन, प्रतापेन, तेजसा, वीर्येण, विक्रमेण, शान्त्या, श्रिया, सौख्येन, धर्मेण विधया च सममेव परलोकं सनाथितवति तत्र भवति वीर विक्रमादित्ये शनैः शनैः पारस्परिकविरोध-विशिथिलीकृत स्नेहबन्धनेषु राजसु, भामिनी भ्रूभङ्ग-भूरिभाव-प्रभाव-पराभूत-वैभवेषु भटेषु, स्वार्थ-चिन्ता-सन्तान वितानैकतानेष्वमात्यवर्गेषु, प्रशंसामात्र प्रियेषु प्रभुषु-इन्द्रस्त्वं वरुणस्त्वं कुबेरस्त्वम्" इति वर्णनमात्रा सक्तेषु बुधजनेषु कश्चन् गजिनीस्थाननिवासी महामदो यवनः ससेनः प्राविशत् भारतवर्षे।

2. 'पूर्वमेघ' के आधार पर यक्ष द्वारा मेघ को दिए गये सन्देश को विस्तार से लिखिए।

3. अम्बिकादत्त व्यास अभिनव बाणभट्ट है। सप्रमाण विवेचन कीजिए।
4. कालिदास रचित मेघदूत (पूर्वमेघ) के आलोक में सिद्ध कीजिए कि कालिदास का कवित्व अप्रतिम है।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. 'पूर्वमेघ' के आधार पर रामगिरि आश्रम से उज्जयिनी तक मेघ की यात्रा का वर्णन कीजिए।
2. "मन्दायन्ते न खलु सुहृदामभ्युपेतार्थकृत्याः" सूक्ति की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए।
3. 'उपमा कालिदासस्य' उक्ति की व्याख्या 'मेघदूत' के आलोक में कीजिए।
4. "स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु" सूक्ति की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए।
5. 'शिवराजविजय' में वर्णित मुनिद्वय की वार्ता में भारतवर्ष की दशा का वर्णन कीजिए।
6. "अम्बिकादत्त व्यास आधुनिक संस्कृत साहित्य के विलक्षण कवि हैं।" इस कथन की पुष्टि 'शिवराजविजय' के आलोक में कीजिए।
7. 'शिवराजविजय' के पात्र 'गौरसिंह' की वीरता का वर्णन करते हुए यवन युवक की हत्या से पूर्व के संवाद का वर्णन कीजिए।

8. 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' सूक्ति की व्याख्या करते हुए गद्यकाव्य का महत्व प्रतिपादित कीजिए।

खण्ड–ग

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ग' में दस (10) वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए एक (01) अंक निर्धारित है। इस खण्ड के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

सही विकल्प चुनिए—

1. 'मेघदूत' किस विधा का काव्य है ?
   (क) महाकाव्य
   (ख) आख्यायिका
   (ग) खण्ड काव्य
   (घ) इनमें से कोई नहीं

2. 'मेघदूत' काव्य में कुल कितने श्लोक हैं ?
   (क) 115
   (ख) 121
   (ग) 125
   (घ) 131

3. 'मेघदूत' किस छन्द में लिखा गया काव्य है ?
   (क) वसन्ततिलका
   (ख) मन्दाक्रान्ता
   (ग) शिखरिणी
   (घ) मालिनी

4. 'शिवराजविजय' में कुल कितने विराम हैं ?
   (क) एक
   (ख) दो
   (ग) तीन
   (घ) चार

5. सुमेलित नहीं है—

(क) मृच्छकटिकम्	—	शूद्रक
(ख) हर्षचरितम्	—	बाणभट्ट
(ग) शिवराजविजय	—	कालिदास
(घ) किरातार्जुनीयम्	—	भारवि

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सत्य/असत्य लिखकर दीजिए—

6. मेघदूत में 'जहनु' कन्या गंगा के लिए प्रयुक्त है।
7. मेघ के मार्ग में उज्जयिनी नगरी नहीं आती है।
8. 'शिवराजविजय' के मंगलाचरण में भगवान् शिव की वन्दना की गयी है।
9. आश्रम में रोती हुई कन्या क्षत्रिय पुत्री थी।
10. 'मेघदूत' में वर्णित यक्षों की नगरी अलकापुरी है।